किसानोंके हितमें कदम

किसान संघटनोंकी दिल्ली कूचकी घोषणाके बीच केन्द्र सरकारका सभी कृषि उपजको न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदनेका ऐलान किसानोंके हितमें बड़ा और सार्थक कदम है। केन्द्रीय कृषिमंत्री शिवराज सिंह चौहानने सदनमें कहा कि सरकार सभी फसलें एमएसपीपर खरीदेगी। इस सम्बन्धमें उनका यह कहना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यह प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीकी गारण्टीको पूरा करनेकी गारण्टी है। अभी सरकार किसानोंको उत्पादन लागतपर ५० प्रतिशतसे अधिककी एमएसपी दे रही है और पिछले दस वर्षोंसे लगातार वृद्धि भी कर रही है, जो इस बातका प्रमाण है कि सरकार किसानोंके कल्याणके प्रति प्रतिबद्ध है। इसके लिए सरकारकी छह प्राथमिकताएं उत्पादन बढ़ाना, लागत घटाना, उत्पादनका उचित मूल्य, फसल नुकसान होनेपर उसकी भरपाई प्रधान मंत्री फसल बीमा योजनासे करना और किसानोंको प्राकृतिक खेतीकी ओर उन्मुक्त करना किसानोंकी आय बढ़ानेवाला है जिसपर सरकारको ध्यान केन्द्रित करने और आगे बढ़नेकी जरूरत है। इस बीच आरबीआईका महंगी और कृषि लागतमें हो रही वृद्धिको देखते हुए किसानोंको बिना गिरवीके दिये जानेवाले ऋणकी सीमा बढ़ानेका निर्णय राहतकारी है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकान्त दासने शुक्रवारको कहा कि अब किसान बिना कुछ गिरवी रखे दो लाख रुपयेतकका ऋण ले सकेंगे। अभी यह १.६० लाख रुपये है। इससे पहले यह सीमा एक लाख रुपये थी। किसानोंको यह सुविधा नये सालसे मिलेगी और सभी बैंकोंके लिए आरबीआईका यह निर्देश बाध्यकारी होगा। सबसे बड़ी सुविधा यह है कि स्माल फाइनेंस बैंक (एसएफबी) भी अब यूपीआईके माध्यमये लोन दे सकेंगे। आरबीआईके इस निर्णयसे ग्रामीण क्षेत्रोंमें मांग बढ़ानेमें मदद मिलेगी, क्योंकि एसएफबीकी पहुंच गांवोंमें अधिक है। पहले यह सुविधा एसएफबीके पास नहीं थी। करोड़ों किसानोंके लाभसे जुड़ी आरबीआईका बिना गिरवीके लोनकी सीमा बढ़ानेका फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि चालू वित्त वर्षमें जीडीपी विकास दरमें मजबूतीके लिए कृषिका प्रदर्शन हर हालमें बेहतर होना चाहिए। कृषिकी उपज बढ़ानेके लिए किसानोंको सभी सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकारकी जिम्मेदारी है। अपनी समस्याओंको लेकर पंजाब-हरियाणाके शम्भू बार्डरपर २९८ दिनसे धरना दे रहे किसान दिल्ली कूचपर अड़े हुए हैं। किसानोंकी मांगोंके प्रति सरकारको उदारतासे विचार करना चाहिए जिससे वार्ताके माध्यमसे कोई सर्वमान्य हल निकाला जा सके। सरकारको उनकी उचित मांगोंके प्रति संवेदनशील होना होगा। यह दोनोंके साथ ही देशहितमें है।

उचित और न्यायसंगत

फर्जी दस्तावेजोंके जरिये सरकारी नौकरी पानेवालोंके खिलाफ सर्वोच्च न्यायालयने बड़ा और उचित कदम उठाया है। सर्वोच्च न्यायालयने सभी राज्य सरकारोंके पुलिस अधिकारियोंको निर्देश दिया है कि वे सरकारी नौकरियोंके चुने गये नवनियुक्त उम्मीदवारोंके चरित्र, पूर्ववत और राष्ट्रीयतासे सम्बन्धित दस्तावेजोंकी जांच और सत्यापन उनकी नियुक्ति तिथिसे छह महीनेके भीतर अनिवार्य की जाय। सर्वोच्च न्यायालयने सेवानिवृत्तिकी तारीखसे दो महीने पहले एक कर्मीकी बर्खास्तगीको खारिज करते हुए यह आदेश दिया है। न्यायालयके इस आदेशसे नवनियुक्त कर्मियोंको भी असमंजसकी स्थितिमें मुक्ति मिलेगी, क्योंकि इस प्रक्रियामें समय-सीमा निर्धारित होगी और साथ ही सरकारी पदोंके लिए जांच प्रक्रिया भी मानकीकृत होगी, जिससे यह सुनिश्चित हो सकेगा कि केवल योग्य व्यक्ति ही इन पदोंपर नियुक्त हुए हैं। याचिकाकर्ता कर्मी १९८५ में लोकसेवामें चयनित हुआ था। पुलिसने लगभग २५ साल बाद अपनी सत्यापन रिपोर्टमें बताया है कि वह देशका नागरिक नहीं है। इसी आधारपर उसको बर्खास्त कर दिया गया। इस मामलेकी सुनवाई कर रहे सर्वोच्च न्यायालयके न्यायाधीश न्यायमूर्ति जे.के. महेश्वरी और आर. महादेवनकी पीठने पांच दिसम्बरको पारित आदेशमें स्पष्ट किया है कि उम्मीदवारोंकी पृष्ठभूमिके सत्यापनके बाद ही सरकारी पदोंपर नियुक्तियोंको नियमित किया जाय जिससे आगेकी जटिलताओंसे बचा जा सके, जैसा कि इस मामलेमें है। साथ ही सत्यापन उनकी नियुक्तिकी तारीखके छह महीनेके भीतर करें। सर्वोच्च न्यायालयका निर्णय सरकारी कर्मचारियोंकी साखकी पुष्टि करनेमें एक व्यवस्थित और समीचीन प्रक्रियाके महत्वको रेखांकित करता है, जो नियुक्तियोंको नियमित करने और सार्वजनिक सेवाकी भूमिकाओंके भीतर ईमानदारीको बनाये रखनेके लिए बड़ा कदम है।

लोक संवाद

अधोपतनका मार्ग

महोदय,- धार्मिकताकी दुहाई देकर धर्मका चोला पहनकर अनीति और अनैतिक काम करनेवालोंको दोहरे आचरणसे आनेवाली युवा पीढ़ी धर्म स्थानपर चल, मायाचार फिरकापरस्ती आदि बुराइयोंको पनपती देखकर धर्मगुरुओंका मूकदर्शक बना रहना उन्हें भ्रमित कर रहा है। धार्मिक विवादोंसे समाज और देशकी दुर्दशा धर्मसे दूर भाग रहे हैं। इसके लिए सम्पूर्ण दोषी असहाय संत और धर्मके तथाकथित ठेकेदार है, जिन्होंने धर्मकी पवित्र जाजमपर जहर घोलकर उस स्थानको ही अपवित्र कर दिया है। अनैतिक स्वार्थी और सत्तालोलुप तथा कथित धार्मिक लोगोंकी घुसपैठको रोकनेके लिए समाज हितैषी और चिन्तनशील संतोंने कमर नहीं कसी तो भविष्य उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। फिरकापरस्तीको धर्ममें कहीं स्थान नहीं है। यह तो पाप और अधोपतनका मार्ग है। कथनी और करनीमें जमीन आसमानका अन्तर होनेके बावजूद धर्ममें दुहाई देना कितनी हास्यास्पद स्थिति है। मंचपर बैठकर महापुरुषोंके सिद्धांतोंमें विश्व शांतिकी ताकत है। दुहाई देनेवाले संत अपने ही उपासकोके विवाद निबटानेमें असमर्थ नजर आ रहे हैं। इससे बढ़कर शर्मकी और क्या बात होगी। एक ही आराध्यके उपासक उन्हींके नामपर टांग खिंचाई कर हंगामें खड़े करके वास्तवमें अपने हाथों महापुरुषोंको चौराहेपर खड़े कर रहे हैं। वे ही धर्मके सच्चे दुश्मन और कपूत है। विवेक युक्त ज्ञानी बन जानेपर स्वतः विवाद समाप्त हो जायंगे। एक मंचपर बैठकर सद्भाव अपनानेका राग अलापते हैं। परन्तु नीचे उतरते ही दूसरे पत पंथकी दीवारें मजबूत कर मानवको खड़े करके बाड़ाबन्दीमें लिप्त हो जाते हैं। तब सुधार कहांसे सम्भव होगा। संत समाज यदि अंतर मनसे चाहे तो एक पलमें सभी धार्मिक विवादोंका अंत हो सकता है। परन्तु उन्हें पंथ मोह सत्ता रही है। हमें आशा रखना व्यर्थ है। धर्मगुरुका अनुयायी टीवी देखे, शराब पिये, बुराइयां अपनावे तो उनके कानपर जूं नही रेंगती। परन्तु उनका अनुयायी अन्य स्थलपर साधना करने चला जायेगा तो उनके बदनमें आग लग जायेगी। उसे फटकारा जायगा। क्या यही धर्म रह गया है। सभी धर्मोंमें रही अच्छाइयोंको आत्मसात करना चाहिए। **-कांतिलाल मांडोत, वाया ईमेल।**

अमेरिकामें आयात शुल्कपर प्रतिक्रिया

अमेरिकामें रिपब्लिकन दलके निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पने कार्यभार नहीं संभाला है। अभी वे अपने अधीन कार्य करनेके लिए नियत विभिन्न विभागोंके लिए प्रमुख योग्य व्यक्तियोंको नियुक्त करनेकी प्रक्रियामें हैं। प्रश्न है कि क्या उन्हें विभिन्न उत्पादोंका निर्यात करनेवाले देशोंपर आयात शुल्कमें सौ प्रतिशततककी वृद्धि करनी चाहिए?

❑ विकेश कुमार बडोला

अमेरिकामें नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पके सम्मुख महत्वपूर्ण प्रश्न कि क्या उन्हें अमेरिकाको विशाल मात्रामें विभिन्न उत्पादोंका निर्यात करनेवाले देशोंपर आयात शुल्कमें सौ प्रतिशततककी वृद्धि करनी चाहिए अथवा नहीं। इस विषयपर व्यापक विचार-विमर्शके उपरांत उनके सम्मुख यह अंतिम निष्कर्ष था कि डेमोक्रेट्सकी व्यापार नीतियोंकी विफलताके कारण तथा विशेषकर यूक्रेनके साथ रूसका युद्ध प्रारंभ होनेके बाद तत्कालीन अमेरिकी शासन द्वारा रूससे कच्चे तेलके क्रयपर प्रतिबंध लगानेके कारण अमेरिकी डालरका अप्रत्याशित अवमूल्यन हुआ है। निष्कर्षीय प्रस्तावके अनुसार इस प्रकरणमें अमेरिकाको बड़ा व्यापार घाटा हुआ है। किन्तु ऐसा विचार और परिणामी निष्कर्ष अधीरताका द्योतक है। अंतरालमें जब ट्रम्प पुनः शासन-प्रशासनका कार्यव्यवहार संभालेंगे तो अमेरिकी व्यापार घाटे तथा मुद्रा अवमूल्यनके कारणोंकी वस्तुस्थिति निश्चित रूपमें उन कारणोंसे पृथक ही होगी, जो शासकीय-प्रशासकीय अनाभ्यासिक वातावरणके कारण ट्रम्प और उनके नवनियुक्त विभागीय प्रमुखोंको अनुभव हो रही है।

वस्तुतः ढाई वर्ष पूर्व रूससे तेलके आयातपर प्रतिबंधके अमेरिकी निर्णयने इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली इत्यादि अधिसंख्य यूरोपीय देशोंको भी इस संदर्भमें अमेरिकाका अनुसरण करनेके लिए विवश किया था और फलतः इन समस्त देशोंको कच्चे तेलका निर्यात करके होनेवाली रूसकी राष्ट्रीय आय अधिमात्रामें रुक गयी। इस संकटसे मुक्ति हेतु रूसने ब्रिक्स समूहके माध्यमसे समाधान निकालनेका प्रयास किया। संकट उत्पन्न होनेसे लेकर गत २४ अक्तूबरतक जितने भी ब्रिक्स सम्मेलन संपन्न हुए हैं, उनमें रूस, चीन, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका सहित ब्रिक्सके समस्त नौ देशोंने अमेरिकी डालरमें व्यापार करनेके व्यापारिक अभ्यास रोकनेके संबंधमें प्रस्ताव पारित किया है। ब्रिक्सने संकल्प किया है कि पारस्परिक व्यापारकी आधार-मुद्रा या तो सदस्य देशोंकी अपनी-अपनी मुद्राएं होंगी अथवा संभावित एकीकृत ब्रिक्स मुद्राके माध्यमसे व्यापार किया जायेगा। चूंकि सऊदी अरब जैसा धन-संपन्न देश भी एक जनवरी २०२४ से ब्रिक्स समूहका सदस्य बन चुका है, इसलिए भी अमेरिकी मुद्राका मूल्य वैश्विक आर्थिक दृष्टिसे कम होनेकी आशंकाएं उभर चुकी हैं। इन्हीं आशंकाओंसे चिंतित संभावित ट्रम्प प्रशासनने अमेरिकी व्यापार घाटा कम करने तथा डालरका मूल्य बढ़ानेके उद्देश्यसे भारत सहित अन्य बड़े एवं प्रमुख देशोंके उत्पादोंके आयातपर सौ प्रतिशत शुल्क लगानेकी अन्तिम नीति बनायी है, जिसका उल्लेख करते हुए ट्रम्पने ब्रिक्सके सदस्य देशोंके विरुद्ध शुल्क वृद्धिकी चेतावनी दे डाली।

डोनाल्ड ट्रम्पने राष्ट्रपति चुनावमें विजय ही इस सार्वजनिक संकल्पके आधारपर प्राप्त की है कि वे अमेरिका तथा अमेरिकियोंके हितोंकी प्राथमिकताके आधारपर रक्षा करेंगे, अतः स्वाभाविक है कि वे अपने पूर्ववर्त्तियोंकी तुलनामें अधिक सत्यनिष्ठाके साथ उक्त संकल्पका कार्यगत निरूपण करेंगे और इस हेतु यह भी निश्चित ही है कि उन्हें भारत, चीन, रूस, सऊदी अरब, इत्यादि सहित विश्वके अधिसंख्य देशोंके विरुद्ध कुछ न कुछ ऐसे कठोर व्यापारिक-व्यावसायिक निर्णय लेने होंगे जो प्रत्यक्ष रूपमें इन देशोंमें सार्वजनिक स्तरपर अस्वीकार्य एवं अनुचित माने जायेंगे। अमेरिकी मुद्रामें व्यापार न करने हेतु देशोंके उत्पादोंपर सौ प्रतिशत आयात-शुल्क लगानेकी ट्रम्पकी चेतावनीके बाद भारतमें सार्वजनिक तथा जनसंचारिका (मीडिया) के स्तर इसे ट्रम्पका अनुचित निर्णय सिद्ध किया जा रहा है। दूसरी ओर इस विषयपर भारतीय शासन, परराष्ट्र मंत्रालयके पदाधिकारियों तथा संबंधित विशेषज्ञोंका मत अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। उनकी रायमें ट्रम्प प्रशासनके लिए व्यावहारिक रूपमें ऐसा कर पाना संभव नहीं है।

डोनाल्ड ट्रम्पने राष्ट्रपति चुनावमें विजय ही इस सार्वजनिक संकल्पके आधारपर प्राप्त की है कि वे अमेरिकियोंके हितोंकी प्राथमिकताके आधारपर रक्षा करेंगे। अतः स्वाभाविक है कि वे अपने पूर्ववर्त्तियोंकी तुलनामें अधिक सत्यनिष्ठाके साथ उक्त संकल्पका कार्यगत निरूपण करेंगे और यह भी निश्चित ही है कि उन्हें भारत, चीन, रूस, सऊदी अरब सहित विश्वके अधिसंख्य देशोंके विरुद्ध ऐसे कठोर व्यापारिक-व्यावसायिक निर्णय लेने होंगे जो प्रत्यक्ष रूपमें इन देशोंमें सार्वजनिक स्तरपर अस्वीकार्य एवं अनुचित माने जायेंगे।

यदि भारतकी दृष्टिसे ट्रम्पकी चेतावनीका तटस्थ विश्लेषण किया जाय तो चेतावनीकी पृष्ठभूमि वाला विषय ट्रम्प-मोदीके मैत्री संबंधोंके आधारपर भारत हितैषी नहीं हो सकता है। ऐसा इसलिए नहीं हो सकता है क्योंकि अमेरिका हो चाहे भारत या फिर कोई भी अन्य देश उसे अपनी एवं अपने मूल नागरिकोंकी स्वायत्तताके अनुरूप विभिन्न विषयोंसे संबंधित निर्णय लेने ही होते हैं। राजनीतिक सत्यनिष्ठाके आधारपर आकलन करनेपर ट्रम्पकी चेतावनी अनुचित प्रतीत नहीं होगी। भारत भी गत दस-बारह वर्षोंसे प्रधान मंत्री मोदीके नेतृत्वमें न्यूनाधिक मात्रामें ट्रम्प वाली भूमिकामें ही है। भारतवासियोंके लिए यह गौरव एवं गरिमा तथा राष्ट्रभक्तिका विषय है। किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसी भूमिकाका धरातलपर अधिक क्रियान्वयन नहीं है। भारतकी ऐसी भूमिका सैद्धांतिक तथा सांकल्पिक स्वरूपमें ही है। इसीलिए यहां भी अमेरिकासे कयी गुणा अधिक अवैध प्रवासन, लोकतंत्रके विरोधाभासोंका सार्वजनिक प्रदर्शन तथा परिणाममें मूल भारतीयोंके हितों एवं अधिकारोंका अनेक स्तरपर हनन हो रहा है।

ट्रम्पको द्वितीय अवधिके लिए सत्तारूढ़ करनेवाले अमेरिकी नागरिकोंकी इच्छा है कि उनका राष्ट्रपति डेमोक्रेट्सकी अमेरिकाघाती राजनीतियोंका अतिक्रमण करके स्वायत्तताका वातावरण निर्मित करे, अमेरिकियोंके नागरिक हितोंका संरक्षण करे तथा इसके लिए अन्य देशोंको अप्रिय लगनेवाले निर्णय ही क्यों न लेने पड़े तो ले। वास्तवमें आयात-शुल्क वृद्धिके संबंधमें स्वयं ट्रम्प, ट्रम्प प्रशासन तथा ट्रम्पकी चेवावनीकी परिधिमें आये भारत सहित समस्त देशोंको इस तथ्यपर अवश्य ध्यान देना चाहिए कि आर्थिक-व्यापारिक मतभेदकी यह स्थिति राष्ट्रके रूपमें अमेरिकाने नहीं, अपितु अमेरिकी जो. बाइडेन शासनकी अदूरदर्शी नीतियोंके कारण ही उत्पन्न हुई है। कार्यभार संभालनेके उपरांत जैसे-जैसे समय व्यतीत होगा ट्रम्प प्रशासन तथा शेष विश्वको अभी ऐसे अनेक मतभेदोंका सामना करना होगा, जिनका बीजारोपण डेमोक्रेट्सकी मानवविरोधी नीतियोंके कारण ही हुआ है। आयात-शुल्क सहित अन्य विषयोंपर नवनिर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपतिकी वास्तविक नीतियोंका कार्यप्रदर्शन तो आधिकारिक रूपमें उनके सत्तारूढ़ होनेके पश्चात् ही निर्धारित हो सकेगा। अतः भारत तथा विश्वके प्रमुख देशोंको इस संबंधमें धैर्य रखनेकी आवश्यकता है। ऐसे वातावरणमें अमेरिकाके साथ भारतका संवाद सर्वथा नवीनता तथा पारदर्शिताके साथ होना चाहिए। इस प्रक्रियामें भारतको यह भी अवश्य ही ध्यानमें रखना चाहिए कि अमेरिकाकी प्रत्येक नीति उसकी शर्तोंपर नहीं हो सकती। अमेरिकाके नये शासनको भी वैश्विक व्यापारिक नीतियोंके संदर्भमें धीरतापूर्वक मंथन करना चाहिए तथा उन्हें उदारतापूर्वक स्वीकार करना होगा कि वर्तमान अमेरिकी चुनौतियों एवं समस्याओंके लिए अन्य देशोंकी गुट सापेक्षता (ब्रिक्स) की तुलनामें डेमोक्रेट्स शासनकी अव्यावहारिक एवं व्यक्तिगत स्वार्थपरताकी नीतियां सर्वाधिक दोषी हैं।

दिव्यताके शिखरपर श्रीकृष्णकी स्मृति

स्मृतिको सामान्यतया अतीतका भाग कहा जाता है। लेकिन स्मृति हमेशा वर्तमान होती है। घटनाएं या विचार अभिव्यक्ति या अन्य सरोकार बेशक अतीतका भाग होते हैं लेकिन उनकी स्मृति हमेशा वर्तमान है। अच्छी स्मृति परम सौभाग्य है।

❑ हृदयनारायण दीक्षित

अच्छी स्मृति जितना जीवंत है, वह उतना ही स्मृतिपूर्ण। जीवनके अंतिम भागमें स्मृति क्षीण होती जाती है। बुढ़ापामें परिजन बताते हैं कि अब वे पहचान नहीं पाते। स्मृति समृद्धि परिपूर्ण तरूणाई है और स्मृतिलोप परिपूर्ण रूग्णता। परिवार, सम्पत्ति, ममत्व, अपनत्व, नेह-स्नेहका घनत्व सब कुछ स्मृतिके सहारे हैं। स्मृति गयी तो सब कुछ गया। स्मृतिमें संसार है। स्मृतिसे संसार है। स्मृति नहीं तो संसार नहीं। स्मृतिमें शुभ है, अशुभ भी है। स्मृतिके अनेक भाग आहतकारी होते हैं और अनेक भाग आह्लादकारी। भारतीय चिंतनमें स्मृतिको विशेष महत्व मिला है। याज्ञवल्क्य स्मृति और मनुस्मृति आदि चर्चित स्मृतियां हैं। मनुःस्मृतिकी प्रशंसा नीत्से जैसे विद्वानोंने की और भर्त्सना डा. अम्बेडकर जैसे महान नेताओंने। मनुस्मृतिमें एक कल्पित विधि व्यवस्था है। ऐसी विधि व्यवस्था भारतीय इतिहासकी किसी भी राज्यव्यवस्थामें नहीं थी। अंग्रेजी राजमें बेशक अनुसूचित जातियोंके एक बहुत बड़े भागको आपराधिक जातियां घोषित किया गया था। ब्रिटिश संसदने क्रिमिनल ट्राइब एक्ट बनाया था। समाजके सक्रिय और श्रमशील भागको जाति जन्मके कारण अपराधी घोषित किया गया था। क्रिमिनल ट्राइब एक्टकी स्मृति अंग्रेजीराजके प्रति घृणाभाव पैदा करती है।

'स्मृति' तंत्र अद्भुत है। देखे, सुने, पढ़े और अनुभूति प्रतीतिका संचित कोष। स्मृति और विवेक ज्ञानका पर्याय हैं। ब्रिटेनके प्रतिष्ठित स्मृति विशेषज्ञ ई.डी. कूकने स्मृति क्षमताके विकासपर मजेदार बात कही है। कूकके अनुसार श्रोमांस और यौन सम्बंधोंके बारेमें सोचनेसे मस्तिष्क तीव्र होता है। भावनाएं और आकर्षण मिलते हैं, रूचि बढ़ती है। इससे स्मृति क्षमतामें वृद्धि होती है। कूकने जोड़ा है कि प्राचीन रोम और यूनानके राजनेता और तर्कशास्त्री वाद-विवादके पूर्व यौन सम्बंध और रोमांसके बारेमें सोचते थे। उनका मानना था कि इससे तर्कशक्तिका विकास होता है। भारतीय परम्परामें स्मृति क्षमताके लिए सतत् अध्ययन एवं शांति पाठका प्राविधान है। हरेक उपनिषद्के प्रारम्भ एवं अंतमें शांति पाठके मंत्र हैं। अशांत चित्त ज्ञान ग्राह्य नहीं होता। प्रशांत चित्तकी ग्राह्यताका क्या कहना। पढ़े या सुनेको स्मृतिका स्थायी भाव बनानेके लिए पाठके अंतमें फिरसे शांति पाठकी व्यवस्था है। केनोपनिषद्के शांतिपाठमें स्तुति है, यहां प्रतिपादित तत्व मुझमें रहें, मैं उनमें रहूं। मेरा सुना देखा गया सुरक्षित रहे। ऐतरेय उपनिषदका शांति पाठ ध्यान देने योग्य है, मेरी वाणी मनमें स्थिर हो। मन वाणीमें स्थिर हो। मन और वाणी अलग-अलग न हो। हे मन और वाणी! तुम दोनों मुझे ज्ञान प्राप्त कराओ। आचार्यसे सुना और अनुभवसे प्राप्त ज्ञान मेरा त्याग न करे। यहां स्मृतिको सुदृढ़ और सर्वकालिक बनानेकी स्तुति है।

यौन विचार या रोमांस चित्त प्रशांत नहीं करते। चित्त अशांत करनेमें ही उनकी भूमिका है और अशांत चित्त मूल स्मृतिको भी अव्यवस्थित करते हैं। स्मृति ज्ञान सम्पदा है। हमारा भोगा और जाना हुआ सार। पाया हुआ, खोया हुआ, कहा सुना और पढ़ा हुआ अमूल्य संचय। यहां कोई चुनाव नहीं। स्मृतिमें सार्थक निरर्थकका सहअस्तित्व है। इतिहास स्मृति है और संस्कृति भी। वेद, भौतिकी, पराभौतिकी, खगोल या भूगोल भी स्मृति हैं। वैदिक संहिताको श्रुति कहा जाता है। वे सुने गये हैं। तब लिपि नहीं थी। वे सुनाये गये थे। तब वे सुनानेवाले ऋषियोंकी स्मृतिमें थे। बादमें सुननेवाले भाग्यवानोंकी स्मृतिका भाग बने। स्मृतिमें अनंत रंग रूप हैं। इनमेंसे सत्य, शिव और सुंदरका चयन हमारा काम है। सत्य, शिव और सुंदरके निर्णय भी हम स्मृतिकोषसे ही करते हैं। स्मृतिकोषमें उपस्थित तथ्योंसे उनकी जांच करते हैं। तब उन्हें सत्य-असत्य, शिव-अशिव या सुन्दर-असुन्दरके खांचेमें डालते हैं। हमारा चित्त निर्णायक भूमिकाका निर्वहन करता है। लेकिन निर्णयके हरेक क्षण और चुनौतीमें स्मृति ही आधारभूत भूमिका निभाती है। स्मृति प्रकृतिका प्राणवान उपहार है मानव जातिके लिए। मनुष्यको ही क्यों सभी प्राणियोंके लिए भी। पौधोंकी संवेदनशीलता स्मृतिपूर्ण है। वे पानी देनेवाले किसान या कर्मचारीको देखकर प्रसन्न होते हैं और लकड़ी काटनेवालेको देखकर सन्न। पशु भी पालकको देखकर पुलकित होते हैं और कसाईको देखकर भयग्रस्त। सारे खेल प्रकृति और स्मृतिके हैं।

स्मृति हमें सचेत करने का काम करती है। निर्णय लेना हमारा ही काम है। पान मसाले की पुड़ियापर 'स्वास्थ्यके लिए खतरा है/तम्बाकू जानलेवा है' पढ़कर भी हम सजग नहीं होते। स्मृति संदेश देती है। अशुभके प्रति सावधान करती है। शुभत्वके प्रति प्रेरित भी करती है। गीतामें स्मृतिको सर्वोत्तम लब्धि बताया गया है। श्रीकृष्णने अर्जुनको ज्ञान दर्शन एवं तत्व दर्शन बताया। अर्जुनने अंतमें कहा, नष्टो मोहा, स्मृति लब्धा तव प्रसादान्मान अच्युत.मोह नष्ट हुआ। आपके प्रसादसे स्मृति मिल गयी। मोहका अर्थ है-अनावश्यकसे लगाव। मोह समाप्त हुआ। मोह नष्ट होना बोधप्राप्ति नहीं है। स्मृतिलाभ वास्तविक लाभ है। अर्जुनको मिली स्मृति असाधारण है। हमारी स्मृतिमें अपने गांव, क्षेत्रकी सड़कोंके नाम संख्या, लम्बाई, चौड़ाई हो सकते हैं। मित्रों शत्रुओंके नाम फोन नंबर भी स्मृति भाग हो सकते हैं। होते भी हैं। अर्जुनके पास ऐसी स्मृति थी। यहां वस्तुतः मूल स्मृतिका उल्लेख है। हम अनंतके अंश हैं। हम अनंत ही हैं लेकिन हमारा बोध इकाईका है। हमारे स्मृतिकोषके सारे अनुभव अंशी हैं। हम हैं, वस्तु, हैं। हम है और वन उपवन। हम हैं और यह संसार है। गहन सम्पूर्णताके बोधमें हमारी स्मृति संपूर्णको समेट लेती है। वृहदारण्यक उपनिषद्के एक मंत्रमें ऋषि ऐसी ही स्मृतिकी चर्चा करते हैं, यह पूर्ण है, वह पूर्ण है, यह पूर्ण उस पूर्णका विस्तार है। पूर्णमें पूर्ण घटाओ तो पूर्ण ही शेष बचता है। गीतामें इसी स्मृतिकी चर्चा है। कथावाचक ज्ञानी प्रोफेसर या आचार्य पूर्ववर्ती विद्वानोंके ज्ञानका उल्लेख करते हैं। हम उन्हें विद्वान कहते हैं। स्मृति और विवेकके कारण ही वे विद्वान हैं।

गीतामें ज्ञान परम्परा है। कृष्णने अर्जुनको बताया था कि यह ज्ञान मैंने ही सूर्यको दिया था फिर परम्परासे तमाम ज्ञानियों, राजर्षियोंतक पहुंचा लेकिन कालके प्रभावमें यह ज्ञान नष्ट हो गया। वही ज्ञान मैं तुमको दे रहा हूं। यहां राष्ट्रीय स्मृतिकी चर्चा है। अर्जुनने कहा कि ये सारे लोग बहुत पहले हुए थे। कृष्णने कहा, हमारे तुम्हारे तमाम जन्म हो चुके। मैं जानता हूं, तू नहीं जानता। श्रीकृष्णकी स्मृति गहरी है। अर्जुनकी सामान्य। श्रीकृष्णकी स्मृतिमें अपने संभवनका सम्पूर्ण इतिहास है। अर्जुनकी स्मृतिमें तात्कालिक जीवनकी स्मृति। स्मृति लब्ध शब्द महत्वपूर्ण है। तब अंश, सम्पूर्ण हो जाता है। स्मृति आन्तरिक दिव्यता है रोमांस चर्चासे इसकी क्षमता नहीं बढ़ती। कामसूत्रके रचनाकार वात्स्यायनने इसे स्मृति क्षीणताका कारक बताया है। श्वेताश्वतर उपनिषदमें हम सबको अमृत पुत्र कहा गया है। यह बात हम सबको स्मृतिमें सुरक्षित रखनी है।

भक्तिका गुण

❑ जग्गी वासुदेव

जीवनके सफरको आनन्दमय बनानेके लिए कृपा प्राप्त करनी होगी और इसे पानेका सबसे आसान तरीका भक्ति है। लेकिन बुद्धि बहुत चालाक है, यह किसीकी भक्त नहीं बन सकती। आप भक्ति गीत गा सकते हैं, लेकिन आपकी बुद्धि तर्क करती है, हिसाब लगाती है। एक मतलबी बुद्धि कभी भी भक्ति नहीं कर सकती। ऐसेमें भक्त बननेकी कोशिश करना समय और जीवन दोनोंकी बर्बादी है। मैनें बहुत सारे भक्ति गीत एवं संगीत सुने हैं, वास्तवमें इनमें कोई भक्ति नहीं होती, इनमें ईश्वरसे केवल व्यापार झलकता है। एक भक्त किसी व्यक्तिका भक्त नहीं होता, भक्ति तो एक गुण है। भक्तिका अर्थ है, खुदको किसी एक दिशा या लक्ष्यको सौ फीसदी सौंप देना। यदि आप निरन्तर एक दिशामें केन्द्रित हैं तो आप भक्त हैं। जब कोई व्यक्ति ऐसा हो जाता है कि उसके विचार, भावनाएं और सब कुछ एकाग्र हो जाय तब वह कृपाका पात्र हो जाता है, उसके ऊपर कृपा होना स्वाभाविक है। आप किसके प्रति समर्पित हैं या किसके भक्त हैं, मुद्दा यह नहीं है। यदि आप सोचते हैं कि मैं भक्त बनना चाहता हूं या मैं भक्ति करना चाहता हूं, लेकिन आपके मनमें कहीं यह संदेह है कि ईश्वर है भी या नहीं, फिर आप भ्रममें हैं। आपको यह समझ लेना जरूरी है कि ईश्वरका अस्तित्व नहीं है, लेकिन जहां भक्त है वहां ईश्वर अवश्य निवास करता है। भक्ति इसलिए नहीं आयी, क्योंकि भगवान हैं। क्योंकि भक्ति है इसीलिए भगवान हैं। भक्तिकी शक्ति कुछ ऐसी है कि वह सृष्टाका सृजन कर सकती है। जिसे मैं भक्ति कहता हूं उसकी गहराई ऐसी है कि यदि ईश्वर नहीं भी हो तो भी वह उसका सृजन कर सकती है, उसको उतार सकती है। एक तार्किक बुद्धिको हमेशा भक्तिसे एलर्जी होती है, क्योंकि तथाकथित भक्तोंने केवल अपनी मूर्खता ही दिखाई है। भयको भक्तिके रूपमें पेश किया गया। अधिकांश लोगोंने अपनी कुटिलताको भक्तिके रूपमें पेश किया। एक बुद्धिमान व्यक्ति ही भक्तिका आनन्द जान सकता है, कोई मूर्ख नहीं। भक्तिके बिना आपके जीवनमें कोई गहराई नहीं होती। भक्तिके बिना आपका जीवन छिछला हो जाता है। यदि आप तर्क विचार करें तो सभी कुछ निरर्थक है। यदि आप अपनी तार्किक बुद्धिकी पैनी धार चलाकर देखें तो यह सम्पूर्ण सृष्टि, आप स्वयं और दुनियामें कोई भी किसी कामका नहीं है। जब भक्ति आती है तभी जीवनमें गहराई आती है। भक्तिका अर्थ मंदिर जाकर राम-राम कहना नहीं है। वह इनसान जो अपने एकमात्र लक्ष्यके प्रति एकाग्रचित्त है, वह जो भी काम कर रहा है, उसमें वह पूरी तरहसे समर्पित है, वही सच्चा भक्त है।

देवेन्द्र फडणवीसके साथ पटरीपर महाराष्ट्रकी राजनीति

❑ अवधेश कुमार

देवेंद्र फडणवीसके मुख्य मंत्री बननेके साथ महाराष्ट्रकी राजनीतिके स्थिर आयामतक पहुंचनेका संकेत मिल रहा है। २०१४ से देवेंद्र फडणवीसके नेतृत्वमें महाराष्ट्रकी राजनीतिके जिस दौरकी शुरुआत हुई उसपर २०१९ में ग्रहण लगनेका कोई स्वाभाविक कारण नहीं था। भाजपा और शिवसेना दोनोंको मिलाकर जनताने १६१ सीटोंका बहुमत दिया था लेकिन उद्धव ठाकरेके नेतृत्ववाले शिवसेनाने मुख्य मंत्रीके रूपमें समर्थन देनेसे इनकार कर स्वयं अपनी दावेदारी पेश की। यहांसे महाराष्ट्रकी राजनीति अस्वाभाविक, अनैतिक और अस्थिरताके ऐसे दौरमें उलझी जहां राजनीतिक विचारधाराका सबसे बड़ा संभ्रम कायम हुआ। शरद पवारके नेतृत्वमें राकांपा और कांग्रेस तो राजनीतिक साझेदार थे ही लेकिन महाराष्ट्रमें आक्रामक हिन्दुत्वकी राजनीतिवाले शिवसेनाने सत्ताके नेतृत्वके लिए जिस तरह रंग बदला उसे जनताकी स्थायी स्वीकृति मिलनी २०१४ से भारत में आरम्भ हुई राजनीतिके दौरके बीच असाधारण घटना होती।

सच कहें तो महाराष्ट्रकी राजनीतिक सत्ता अब स्वाभाविक विचारधाराकी पटरीपर आ गयी है। वैसे तो जून २०२२ में एकनाथ शिंदेके नेतृत्वमें शिवसेनाके अन्दर हुए विद्रोहने ही संदेश दे दिया कि अस्वाभाविक वैचारिकताके घुटनको बड़ा वर्ग स्वीकार करनेको तैयार नहीं। दूसरी ओर जब अजीत पवारके नेतृत्वमें राकांपा भी इस ओर आ गयी तो साफ हो गया कि महाराष्ट्रके सत्ता समीकरणमें कांग्रेसको छोड़ किसी दलके अन्दर सहजता नहीं थी। हालांकि लोकसभा चुनावमें महाविकास अघाड़के प्रभावी प्रदर्शनने फिर एक बार स्वाभाविक राजनीतिपर ग्रहण लगाया लेकिन निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ विश्लेषक मान रहे थे कि यह भी एक अस्थायी परिघटना ही है। लोकसभा चुनावमें कई कारकोंने महाराष्ट्रके साथ उत्तर प्रदेश तथा इससे कम परिमाणमें कुछ दूसरे राज्योंमें अपनी भूमिका निभायी जिसे भाजपा नेतृत्वमें राजगकी सीटें कम हुईं। परिणामके बाद स्वयं मतदाताओंको भी लगा उनसे गलती हो चुकी है। पहले हरियाणा और फिर महाराष्ट्रमें मतदाताओंने अनुकूल परिस्थितियों, सक्षम नेतृत्व एवं समीकरणोंकी सहजताको देखते हुए अपना जनादेश दे दिया।

किसी भी नेताके मुख्य मंत्री बननेके बाद गठबंधन विजयी हो और सरकारमें होते हुए फिर उसे पदपर न लाया जाय तो समस्या होती है। चुनाव परिणामके बाद सरकार गठनमें लगभग दो सप्ताहका समय इसी कारण लगा, क्योंकि देवेंद्रको नेताके रूपमें स्वीकार करनेके लिए एकनाथ शिंदेको तैयार करना था या उन्हें तैयार होना था। चुनाव परिणामसे इतना तो साफ है कि एकनाथ शिंदेके विद्रोहको शिव सैनिकोंने स्वीकार किया और उन्होंने इतने प्रभावी परिवारसे पार्टीको अलग कर स्वाभाविक पटरीपर लानेकी अकल्पनीय भूमिका निभायी। जून २०२२ में भाजपा नेतृत्वके सामने सरकारकी स्थिरता और सुदृढ़ताके लिए आवश्यक था कि शिंदेको नेतृत्व दिया जाय। भाजपा नेतृत्वने उन्हें स्थायी रूपसे मुख्य मंत्री बनानेका कोई वचन दिया होता तो वह अवश्य इसकी चर्चा करते। पूरे चुनाव अभियानके दौरान कोई भी मुख्य मंत्रीके चेहरेके रूपमें पेश नहीं किया गया। शिंदेके समर्थक और शिवसैनिकोंका निश्चित रूपसे एक बड़ा वर्ग फिरसे उन्हें मुख्य मंत्रीके रूपमें देखना चाहता होगा लेकिन ऐसा जारी रहना ही फिर महाराष्ट्रकी राजनीतिके अस्वाभाविक अस्थिर होनेका कारण बन जाता। शिंदेको भी जन प्रतिक्रियाका आभास होगा अहसास हो गया होगा कि उद्धव ठाकरेके विरुद्ध विद्रोहसे निर्मित सशक्त नेताकी उनकी छवि सरकार गठनमें बाधा बननेसे काफी कमजोर हो रही है। उनकी वर्तमान भूमिका भविष्यपर ग्रहण लग रहा था। कह सकते हैं कि दूसरे साझेदार अजीत पवारके साथ भाजपाको बहुमत मिल गया था और इसमें शिंदेकी अपरिहार्यता नहीं रह गयी थी। यह सतहपर दिखने वाला एक पहलू है। भाजपा नेतृत्वको पता है कि महाराष्ट्रकी राजनीतिमें उनके लिए शिंदे नेतृत्ववाली शिवसेनाका साथ विचारधाराके आधारपर दीर्घकालिक काम करनेके लिए आज आवश्यक है।

वैसे गठबंधनमें साझेदार होनेके कारण अजीत पवारके मंतव्यका भी नेतृत्वके संदर्भमें महत्व था और उन्होंने भी परिपक्वता दिखाई। सच कहें तो प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी और स्वराष्ट्रमंत्री अमित शाहके नेतृत्वमें भाजपाने दूरगामी सोचके साथ अपनी पार्टी और दोनों साझेदारोंको किसी स्तरपर असंतुष्ट और नाराज होनेका अवसर नहीं दिया। संघकी भी प्रभावी सक्रियता थी। यही कारण था कि सीटोंके बंटवारे और उम्मीदवारोंके चयनतकमें थोड़ी बहुत हल्के-फुल्के मतभेद होते हुए भी तीनों पार्टियों तथा प्रमुख नेता बिल्कुल एकजुट होकर चुनाव लड़ते रहे। किसीने भी एक दूसरेके विरुद्ध भ्रम पैदा होनेका एक बयान नहीं दिया। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है एकनाथ शिंदे जब उद्धव ठाकरेके विरुद्ध विद्रोह कर बाहर आये थे तो उन्हें भी भान नहीं था कि भाजपा उनके हाथों सरकारका नेतृत्व सौंप देगी। भाजपाके पास विधानसभामें १०५ सीटें थीं। जब पत्रकार वार्तामें देवेंद्र फ्ड़णवीस ने मुख्यमंत्री के रूप में उनके नामकी घोषणा की तो उन्होंने बिल्कुल एक शत-प्रतिशत कृतज्ञभरे भावके साथ इसे देवेंद्रकी महानता और विशेष कृपा करार दिया था तो उनके अन्दर भी यह भाव अवश्य रहा होगा कि देवेंद्र फडणवीस ही भाजपा और गठबंधनके स्वाभाविक नेता होंगे। वैसे देवेंद्रकी शिंदेको गठबंधनसे बाहर लानेमें बहुत बड़ी भूमिका थी। उन्होंने उद्धव ठाकरे और शरद पवार दोनोंके विरुद्ध राजनीतिक मोर्चा खोला और पवारको तो सीधी चुनौती दी।

अब प्रश्न है कि आगे सरकारकी दिशा क्या होगी। पूरे चुनाव अभियानमें देवेंद्र फडणवीसकी छवि एक परिपक्व एवं आत्मविश्वाससे भरे हिन्दुत्ववादी शुद्ध स्वयंसेवक भाजपा नेताकी बनी। उन्होंने प्रदेशमें कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं और उनका समर्थन देनेवाले महाविकास आघाड़ीके विरुद्ध लगातार प्रखर आक्रमणोंसे अपनी छवि वर्तमान राजनीतिक धाराके अनुरूप बनायी। संघ और भाजपाके केन्द्रीय नेतृत्वकी ओरसे इसकी हरी झंडी थी इसलिए उन्हें खुलकर सामने आनेमें समस्या भी नहीं हुई। इस मंचसे उनके द्वारा द्वारा गाये जा रहे जागो हिन्दू गीत भी वायरल था और इसका असर हुआ। भाजपामें केन्द्रीय नेतृत्वके बाद उत्तर प्रदेशके मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथकी छवि पहलेसे प्रखर हिंदुत्ववादी नेता की है। देवेंद्र फडणवीसके राजनीतिक जीवनका यहांसे नये दौरकी शुरुआत हुई है और महाराष्ट्रमें भी आनेवाले समयमें हमें देश एवं प्रदेशके लिए अति आवश्यक कट्टर इस्लामवादके विरुद्ध प्रखर हिंदुत्वकी नीति साफ दिखाई देगी।

भाजपा विधायक दलका नेता चुने जानेके बाद देवेंद्र फडणवीसने अपने भाषणमें हिन्दवी स्वराजसे लेकर अहिल्याबाई होल्करका नाम लिया और फिर उसी श्रेणीमें बाबा साहबसे लेकर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी एवं अन्य भाजपा नेताओं तथा समर्थन देनेवाले विधायकोंतकका उल्लेख कर अपनी राजनीतिक धाराको बिल्कुल स्पष्ट किया। एक है तो सेफ है और बंटेंगे तो कटेंगे नारेको लेकर महायुतिमें लगा कि मतभेद है। अजीत पवारने योगी आदित्यनाथके बटेंगे तो कटेंगेके विरुद्ध बयान दिया। लेकिन देवेंद्र फडणवीसने अपने साक्षात्कारमें स्पष्ट कह दिया कि योगी जीने कुछ भी गलत नहीं बोला है। औरंगाबादमें उन्होंने वोट जिहादको वोटके धर्मयुद्धसे पराजित करनेकी घोषणा की और इनका भी चमत्कारी कसर हुआ। अजीत पवारके बारेमें भी उनकी टिप्पणी थी कि वह बहुत बाद गठबंधनमें आये हैं और धीरे-धीरे उन्हें भी समझमें आ जायगा। यह सरकार गठनके पूर्व भावी नीतियोंको लेकर घोषणा थी। यानी गठबंधनका कोई दबाव संघ तथा भाजपाके अपने हिन्दुत्व एजेंडाके मार्गमें बाधा नहीं बनेगा। यही विचारधारा शिवसेना शिंदेके नेतृत्वमें शिवसेनाके भी भाजपाके साथ बने रहनेकी गारंटी होगी। धीरे-धीरे शिंदेका व्यवहार भी समान्य पटरीपर आयेगा। जब पांच वर्षतक मुख्य मंत्री रहनेके बावजूद देवेंद्र फडणवीस दूरगामी राजनीतिक हितको देखते हुए उपमुख्य मंत्रीके रूपमें काम कर सकते हैं तो फिर एकनाथ शिंदे क्यों नहीं।